



https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

कभी कभार होने वाले वास्कुलटिक बीमारियां

के संस्करण 2016

2. डायग्नोसिस और इलाज

2.1 वास्कुलटिस के कतिने प्रकार हैं। वास्कुलटिस को कैसे वर्गीकृत करते हैं।

बच्चों में वास्कुलटिस वर्गीकरण रक्त वहनिओ के नाप पर निर्भर करता है। बड़े माप की वास्कुलटिस जैसे टक्यासु आर्टेरिटिस एओरटा और उसकी टहनियाँ को प्रभावित करती है। मध्यम माप की वास्कुलटिस गुर्दे, आँत, दमाग व दिल की धमनियों को प्रभावित करती है (जैसे पोल्यार्टेरिटिस नोडोसा, कावासाकी बीमारी)। छोटे माप की वास्कुलटिस छोटी धमनियों को प्रभावित करती है (जैसे हनोक-शोलाइन परपूरा, चुरग स्ट्रांस सडिरोम, चमड़ी की लुककीटोक्लास्टिक वास्कुलटिस, माइक्रोस्कोपिक पॉलीअनजटिस)।

2.2 इनके मुख्य लक्षण क्या हैं?

बीमारी के लक्षण खून की धमनियों की स्थान (एहम अंग जैसे दमाग, दिल), तथा मात्रा (कुछ जगह या बहुत जगह) व खून के दौरे में कमी की मात्रा पर निर्भर करते हैं। यह खून के दौरे में हलकी कमी से लेकर दौरा पूरा बंद होने तक हो सकता है जिससे प्रभावित अंग में ऑक्सीजन व खाने की कमी हो जाती है। इससे अंग खराब हो जाते हैं। अंग नष्ट होने की मात्रा उसमें खराबी की मात्रा को दर्शाती है। हर बीमारी के अंतर्गत उसके लक्षण लिखे गये हैं।

2.3 इनकी पुष्टि कैसे की जाती है?

वास्कुलटिस की पुष्टि आसान नहीं है। इनके लक्षण बच्चों की अन्य बीमारियों के जैसे होते हैं। इनके डायग्नोसिस के लिए विशेषज्ञ लक्षण, खून व पैशाब की जाँचे व अन्य जाँच (जैसे अल्ट्रासाउंड, एक्सरे, सीटी व एमआरआई) को साथ मूल्यांकन कर सकते हैं। जहाँ जरूरत हो तो कोई अंग का छोटा टुकड़ा ले कर उसकी जाँच करनी पड़ती है। क्योंकि यह बीमारियां बहुत कम पाई जाती हैं इसलिये बच्चे को अधिकतर बड़े अस्पताल जहाँ विशेषज्ञ उपलब्ध हो भेजा जाना चाहिये।

2.4 क्या इनका इलाज है?

हाँ, आजकल इनका इलाज संभव है पर कुछ जटिल मरीजों में यह एक बड़ी चुनौती हो सकती है। अधिकतर मरीजों में ठीक इलाज से बीमारी पर काबू पाया जा सकता है।

2.5 इलाज किस प्रकार का है?

प्राइमरी वास्कुलिटिस का इलाज लम्बे दौरान चलता है। उसका लक्ष्य बीमारी पर जल्दी से जल्दी काबू पाना है और उसे लम्बे समय तक काबू में रखना है, उसी समय यह भी देखना है कि दवा के बुरे असर ना हो। मरीज की उम्र व बीमारी की गंभीरता देख कर हर मरीज के लिए इलाज का चयन किया जाता है।

कॉर्टिकोस्टेरॉइड प्रतिरक्षा क्षमता कम करने वाली दवाये जैसे सक्लिफोस्फेमिड के साथ बीमारी को काबू पाने में कारगर सिद्ध होते हैं।

बीमारी को लगातार काबू में रखने के लिए: अज़थीप्रिन, मेथोट्रेक्सेट, मयकोफेनॉलाट व थोड़ी मात्रा में प्रेडनिसोलोन प्रयोग में लायी जाती है। अन्य कई दवाएं जो इम्यून सस्टिम को दबा कर रख सकती हैं को भी प्रयोग में लाया जाता है जब साधारण दवाएं काम नहीं करती। इनमें नए बलियोजकिल दवाये (जैसे टी एन एफ़ अवरोधक व रटिक्सीमेब), कोल्चसिनि और थैलडोमिड शामिल हैं।

लम्बे दौरान स्टेरॉयड से इलाज में, ऑस्टियोपोरोसिस से बचने के लिए पर्याप्त कैल्सियम व विटामिन डी लेना चाहिए। खून पतला करने के लिए दवाएं (एस्पिरिन या अन्य दवाये) और यदि ब्लड प्रेशर बढ़ जाये तो उसे कम करने वाली दवाएं भी प्रयोग में लानी पड़ती हैं। मांशपेशियों को सुधारने के लिए कसरत की जरूरत पड़ सकती है, व बीमारी के तनाव से बचने के लिए मरीज व उसके परिवार की सामाजिक मदद करनी चाहिए।

2.6 और तरह के इलाजों के बारे में क्या?

बहु प्रकार के इलाज प्रचलित हैं व इससे मरीज व उसके परिवार भ्रमति हो जाते हैं। इन इलाजों को प्रयोग करने से पहले उनके फायदे व हानि के बारे में सोच लें क्योंकि उनके कारगर होने का कोई सबूत नहीं है व वह महंगे होते हैं। यदि आप उन्हें प्रयोग करना चाहते हैं तो अपने डॉक्टर से सलाह लें। कुछ इलाज आपकी दवा के साथ बुरा असर कर सकते हैं। अधिकतर डॉक्टर उसके बारे में मना नहीं करेंगे जब तक आप बाकी इलाज करते रहेंगे। यह बहुत जरुरी है की आप अपनी दवा बंद न करें। यदि दवा आपकी बीमारी को नियंत्रित रखने में मदद कर रही है तो उसको रोकना खतरनाक हो सकता है। दवा के बारे में अपने बच्चे के डॉक्टर से परामर्श करें।

2.7 जाँच

समय समय पर डॉक्टर की सलाह लेने का मुख्य उद्देश्य बीमारी की दशा व दवा के बुरे असर को देखना है जिससे मरीज को ज्यादा फायदा हो सके। कतिनी बार और कतिने समय के बाद मरीज को देखा जाए, बीमारी की गंभीरता व क्या दवाएं दी जा रही हैं पर निर्भर करता है।

बीमारी की शुरुआत में मरीज को ओ पी डी में देखा जा सकता पर गंभीर मरीजों को भरती करने की जरूरत बार बार पड़ सकती है। जैसे बीमारी कंट्रोल में आ जाती है तो मरीज को कम बार अस्पताल आना पड़ता है।

वास्कुलिटिस के मूल्यांकन के कई तरीके हैं। बच्चे की स्थिति के बारे में बदलाव के बारे में पूछने के साथ, पेशाब की जाँच व ब्लड प्रेशर की जाँच की जाती है। वसितृत चकित्सकीय परीक्षण के साथ मरीज के शिकायत के आधार पर बीमारी का मूल्यांकन किया जाता है। खून व पेशाब की जाँच के जरिये सूजन, अंगों में प्रभाव, दवा के कुप्रभाव का पता लगता है। दूसरे अंगों पर बीमारी का प्रभाव होने पर दूसरे विशिष्ट परीक्षण व (इमेजिंग) कराना पड़ सकता है।

2.8 बीमारी कब तक चलेगी?

वास्कुलिटिस बीमारी बहुत लम्बी चलती है, कई बार जदिगी भर। बीमारी की शुरुआत अचानक हो सकती है जो कि बहुत गम्भीर व कभी कभी प्राणघातक हो सकती है और बाद में यह लम्बे दौरान रहने वाली बीमारी बन जाती है।

2.9 बीमारी की स्थिति आगे चलकर किस प्रकार रहेगी?

बीमारी की स्थिति हर मरीज में अलग-अलग होती है। बीमारी की स्थितिरिक्त धमनी के प्रकार व बीमारी की गंभीरता पर निर्भर करती है। इसके अलावा बीमारी के प्रारम्भ व इलाज के बीच की समयावधि पर भी निर्भर करती है। साथ ही दवा के परिणाम पर भी निर्भर करती है। बीमारी की सक्रियता पर निर्भर करता है कि दूसरे अंग प्रभावित होते हैं या नहीं। यदि शरीर के जरूरी अंग प्रभावित हो गये तो बीमारी का प्रभाव लम्बे समय तक रहता है। यदि ठीक से इलाज किया जाये तो बीमारी पहले वर्ष में ठीक हो सकती है। हो सकता है मरीज पूरी जदिगी ठीक रहे, मगर ज्यादातर मरीजों को लम्बे समय तक दवा खानी पड़ती है। बीमारी की सक्रियता घटती बढ़ती रहती है जिसके कारण कभी कभी ज्यादा दवा की जरूरत पड़ सकती है। इलाज न होने पर बीमारी प्राणघातक हो सकती है। बीमारी का प्रतिशत कम होने के कारण बीमारी के लम्बे प्रभाव व प्राणघातकता के बारे में आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।